शनि शांति पाठ



विषयसूची

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

ॐ नीलांजनसमाभासं
रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तंडसंभूतं
तं नमामि शनैश्चरम् ॐ ।।

ॐ शन्नो देवीरभीष्टयऽआपोभवन्तु पीतये
शंय्यो रभिस्त्रवन्तुनः शनैश्चराय नमः ।।

शनिदेव का परिचय

सौरमंडल में अपने दुष्प्रभावों के कारण शनि को बहुत अनिष्टकारी ग्रह कहा जाता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बृहस्पति के बाद दूसरा बड़ा ग्रह है शनि। शनि के २१ उपग्रह हैं। अन्य ग्रहों की तरह शनि ग्रह भी सूर्य की परिक्रमा करता है। शनि की परिक्रमा ३० वर्ष में पूरी होती है। जबकि शनि अपनी धुरी पर १० घंटे, १४ मिनट में एक बार घूमता है।

जन्म-कुण्डली में उच्च स्थान पर होने के कारण शनि उस स्त्री-पुरुष को दीर्घ आयु, धन-धान्य से परिपूर्ण और अत्यधिक सम्मान दिलाता है लेकिन विपरीत स्थिति में यह निर्धनता, दासता और शोषण की स्थितियों को पैदा करता है। किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्म-कुण्डली में शनि का प्रकोप ढाई से

साढ़े सात वर्ष तक हो सकता है।

शनि ग्रह का पश्चिम दिशा में आधिपत्य रहता है। शिशिर ऋतु पर शनि का स्वामित्व रहता है। लौह धातु पर शनि का प्रभाव विशेष रूप से रहता है, इसलिए शनिवार को लौह धातु की कोई वस्तु नहीं खरीदी जाती। शनि का कुण्डली के छठे, आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर विशेष प्रभाव रहता है। दक्षिणायन की स्थिति में कृष्णपक्ष, रात्रि में शनि अधिक शक्तिशाली हो जाता है।

मकर और कुंभ राशियों का स्वामी शनि ग्रह है। मेष राशि में शनि निम्न (नीच) रूप धारण करता है, जबकि तुला राशि में उच्च माना जाता है। वृष, तुला, कन्या, मिथुन शनि की प्रिय राशियां हैं, जबकि मेष और वृश्चिक शत्रु राशियां हैं। मीन और धनु राशि में होने पर विकृतियों में यह कमी करता है।

विश्व के समस्त उद्योग, व्यवसाय, कल-

कारखाने, धातु उद्योग, लौह वस्तु, समस्त तेल, काले रंग की वस्तु, काले जीव-जन्तु, अकाल, पुलिस भय, कारागार, रोग भय, गुर्दे के रोग, जुआ, सट्टा, लॉटरी, चोर भय तथा क्रूर कार्यों का स्वामी है शनि।

यहां एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि शनि को भगवान शिव ने दंडाधिकारी घोषित किया है। इसलिए इनके द्वारा दिया गया दुःख-क्लेश जीवन में कटु अनुभवों को देने वाला तथा जीवन के मोहों को भंग करने वाला होता है।

शनि ग्रह की शान्ति तथा सुखों की इच्छा रखने वाले स्त्री-पुरुषों को शनिवार का व्रत करना चाहिए। विधिपूर्वक शनिवार का व्रत करने से शनिजनित संपूर्ण दोष, रोग-शोक नष्ट हो जाते हैं, धन का लाभ होता है। स्वास्थ्य, सुख तथा बुद्धि की वृद्धि होती है।

व्रत-विधि

शनि व्रत प्रत्येक स्त्री-पुरुष कर सकता है। इस व्रत को किसी भी शनिवार से आरम्भ किया जा सकता है। श्रावण मास के श्रेष्ठ शनिवार से व्रत आरम्भ किया जाए तो विशेष लाभप्रद रहता है।

व्रती मनुष्य नदी आदि के जल में स्नान कर, ऋषि-पितृ तर्पण करे, सुन्दर कलश जल से भर कर लावे, शनि प्रतिमा के पास अथवा पीपल के पेड़ के नीचे सुन्दर वेदी बनावे, उसे गोबर से लीपे, लौह से निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत में स्नान कराकर काले चावलों से बनाए हुए चौबीस दल के कमल पर स्थापित करे। काले रंग के गंध, पुष्प, अष्टांग, धूप, फूल, उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन करे। शनि के दस नामों का

उच्चारण करे, जो इस प्रकार हैं:—

१. ॐ कोणस्थाय नमः
२. ॐ पिंगलाय नमः
३. ॐ बभ्रवे नमः
४. ॐ कृष्णाय नमः
५. ॐ रौद्रांतकाय नमः
६. ॐ यमाय नमः
७. ॐ सौरये नमः
८. ॐ मन्दाय नमः
९. ॐ शनैश्चराय नमः
१०. ॐ पिप्पलादेन संस्तुताय नमः

पीपल के वृक्ष में सूत के सात धागे लपेटकर सात परिक्रमा करे तथा वृक्ष का पूजन करे। शनि पूजन सूर्योदय से पूर्व तारों की छांव में करना चाहिए। शनिवार व्रत-कथा को भक्ति और प्रेमपूर्वक सुने। कथा कहने वाले को दक्षिणा दे। तिल, जौ, उड़द,

गुड़, लोहा, तेल, नीले वस्त्र का दान करे। आरती करे और प्रार्थना करके प्रसाद बांटे।

पहले शनिवार को उड़द का भात और दही, दूसरे शनिवार को खीर, तीसरे को खजला, चौथे शनिवार को घी और पूरियों का भोग लगावे। इस प्रकार तैंतीस शनिवार तक इस व्रत को करे। इससे शनिदेव प्रसन्न होते हैं। इससे सब प्रकार के कष्ट, अरिष्ट तथा आधि-व्याधियों का नाश होता है और अनेक प्रकार के सुख-साधनों, यथा--धन, पुत्र, पौत्रादि की प्राप्ति होती है।

कामना की पूर्ति होने पर शनिवार के व्रत का उद्यापन करे। तैंतीस ब्राह्मणों को भोजन करावे, व्रत का विसर्जन करे। इस प्रकार व्रत का उद्यापन करने से पूर्ण फल की प्राप्ति होती है एवं सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। राहु, केतु और शनि के कष्ट निवारण

हेतु शनिवार के व्रत का विधान है।

इस व्रत में शनि की लोहे की, राहु व केतु की शीशे की मूर्ति बनवाएं। कृष्ण वर्ण वस्त्र, दो भुजदण्ड और अक्षमालाधारी, काले रंग के आठ घोड़े वाले शीशे के रथ में बैठे शनि का ध्यान करें। कराल बदन, खड्ग, चर्म और शूल से युक्त नीले सिंहासन पर विराजमान वरप्रद राहु का ध्यान करें। धूम्र वर्ण, भुजदण्डों, गदादि आयुध, गृध्रासन पर विराजमान, विकटासन और वरप्रद केतु का ध्यान करें। इन्हीं स्वरूपों में मूर्तियों का निर्माण करावें अथवा गोलाकार मूर्ति बनावें। काले रंग के चावलों से चौबीस दल का कमल बनाएं। कमल के मध्य में शनि, दक्षिण भाग में राहु और वाम भाग में केतु की स्थापना करें। रक्त चन्दन में केशर मिलाकर, गन्ध-चावल में काजल मिलाकर, काले चावल,

काकमाची, कागलहर के काले पुष्प, कस्तूरी आदि से 'कृष्ण धूप' और तिल आदि के संयोग से कृष्ण नैवेद्य (भोग) अर्पण करें और 'शनैश्चर नमस्तुभ्यं नमस्तेतवथ राहवे। केतवेऽथ नमस्तुभ्यं सर्वशान्तिप्रदो भव' मंत्र से प्रार्थना करें।

सात शनिवार व्रत करें। घी व काले तिल से प्रत्येक के लिए १०८ आहुतियां दें और ब्राह्मणों को भोजन करावें।

इस प्रकार शनिवार के व्रत के प्रभाव से शनि, राहु, केतुजनित कष्ट, सभी प्रकार के अरिष्टों का सर्वथा नाश होता है।

- महाकाली की उपासना करें। नारियल चढ़ाएं।
- उड़द की दाल का भोजन प्रयोग में न लाएं।
- पीपल की जड़ में तेल चढ़ाएं।
- तेल का दीपक सुबह-शाम जलाएं।

पूजन

नवग्रहों की तरह शनि ग्रह की भी पूजा की जाती है। शनिवार का व्रत करने वाले स्त्री-पुरुष को व्रत करते हुए दोपहर को बिना नमक का भोजन, दाल, चावल की खिचड़ी खाना चाहिए। इसके साथ पूजन के समय कृष्ण वर्ण के फूल या बिल्व पत्र और कृष्ण वर्ण के अक्षत लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए शनिदेव का आवाहन करना चाहिए।

नीलांबुजसमाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं शनिमावाह्याम्यहम्॥

'हे सूर्य पुत्र, यम के ज्येष्ठ भाई, मार्तण्ड छाया से उत्पन्न शनि देवता मैं आपका आवाहन करता हूं।'

शनि की स्थापना के लिए निम्न मंत्र का उच्चारण करें— ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहागच्छ इहातिष्ठ शनैश्चराय नमः।

'हे शनिदेव! आप आएं और स्थापित हों। आपको नमन है।'

शनि की उपासना के लिए शनि देवता के चित्र या मूर्ति का स्मरण करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करते हैं—

ॐ सूर्यपुत्रो दीर्घदेही विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दाचार प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥

'हे बड़े-बड़े नेत्रों वाले, विशाल शरीर वाले, सूर्य पुत्र और शिव के अति प्रिय शनि देवता मेरे सभी कष्ट दूर करें।'

शनि पूजन में शनि यंत्र द्वारा पूजा करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण किया जाता है—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्त्रवन्तुः नः ॐ शनैश्चराय नमः।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यह शनि का तैंतीस अंकीय यंत्र है। शनिवार को गंगाजल या गुलाब में घुली काली स्याही से नीले रंग के कागज या भोजपत्र पर इसका निर्माण करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उस शनिवार को व्याघात कारक योग न हो। शुद्ध लोहे या जस्ते के पत्र पर भी इसका निर्माण कराया जा सकता है। यंत्र की स्थापना करें। उपरोक्त मंत्र का २३,००० बार रुद्राक्ष की माला से जप करना चाहिए।

मनवांछित कार्य सिद्धि के लिए ९२,००० बार मंत्र का जप किया जाता है।

किसी पीपल के पेड़ के नीचे कड़वे तेल का दीपक जला कर शनिवार की संध्या को यंत्र का पूजन अभीष्ट फल देने वाला होता है। जब तक अनुष्ठान समाप्त न हो, पीपल के नीचे यंत्र को सुरक्षित रखें। घर में पवित्र स्थान (पूजा-स्थान) पर भी इसे स्थापित किया जा सकता है। अनुष्ठान के बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

बीज मंत्र—ॐ शं शनैश्चराय नम:

शनि गायत्री—

ॐ भूर्भुव: स्व: शन्नो देवीरभिष्टये विद्महे नीलांजनाय धीमहि तन्नो शनि: प्रचोदयात्।

शनि ग्रह के पूजन के लिए मध्याह्नकाल का विधान है। पूजन के समय श्री शनैश्चर-

स्तवराज का पाठ करना शुभ फलदायक होता है। पूजन के बाद काले तिल, उड़द, तेल, काला वस्त्र, लोहा, नीलम, कस्तूरी, स्वर्ण का दान करना चाहिए।

शनि पत्नी नाम

ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलहप्रिया।
कंटकी कलही चाऽथ तुरंगी महिषी अजा॥
शनेर्नामानि पत्नीनामेतानि संजपन् पुमान्।
दुःखानि नाशयेन्नित्यं सौभाग्यमेधते सुखम्॥

जो शनि पत्नी के इन नामों का पाठ करता है, उसके समस्त दुःखों का नाश होता है। वह सौभाग्य का स्वामी बनता है तथा सुखों को प्राप्त करता है।

सूर्य का मंत्र

नीचे दिए गए सूर्य मंत्र का ७५०० की संख्या में जप करें, शनि दोष निवारण होता है।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।

श्रीशनैश्चरस्तवराजः

विनियोग— *अस्य श्रीशनैश्चरस्तवराजस्य सिन्धुद्वीपऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवता शनैश्चरप्रीत्यर्थं पाठे विनियोगः ।*

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम् ॥
शिरो मे भास्करः पातु भालं छायासुतोऽवतु ।
कोटराक्षो दृशो पातु शिखिकण्ठनिभिः श्रुती ॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु ।
स्कन्धो संवर्त्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु ॥
सौरि मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु ।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः ॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः ।
रक्षमेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम् ॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः ।
सौरिः शनैश्चरः कृष्णोनीलोत्पलनिभः शनिः ॥

शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषण: ।
शिखिकण्ठनिभो नीलच्छायाहृदयनन्दन: ।।
कालदृष्टि: कोटराक्ष: स्थूलरोमावलीमुख: ।
दीर्घो निर्मांसगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानक: ।।
नीलांशु: क्रोधिनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधर: ।
मन्दो मन्दगति: खंजो तृप्त: संवर्त्तको यम: ।।
ग्रहराज: कराली च सूर्यपुत्रो रवि: शशी: ।
कुंजो, बुधो, गुरु, काव्यो भानुज: सिंहिकासुत: ।।
केतुर्देवपतिर्बाहु: कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा ।
शशी मरुत् कुबेरश्च ईशान: सुर आत्मभू: ।।
विष्णुर्हरो गणपति: कुमार: काम ईश्वर: ।
कर्त्ता हर्ता पालयिता राज्येशो राज्यदायक: ।।
छायासुत: श्यामलाङ्गो धनहर्ता धनप्रद: ।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधक: ।।
तुष्टो रुष्टो कामरूप: कामदो रविनन्दन: ।
ग्रहपीडाहर: शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वर: ।।
स्थिरासन: स्थिरगतिर्महाकायो महाबल: ।
महाप्रभो महाकाल: कालात्मा कालि कालक: ।।

आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः ।
शतभिरक्षदयिता त्रयोदशीतिथिप्रियः ॥
तिथ्यात्मकस्तिथिगणो नक्षत्रगणनायकः ।
योगराशिमुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः ॥
शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्याभयदायकः ।
नीलवासः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जनचयच्छविः ॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना सौरेश्छायासुतस्य यः ॥
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान्यः स्तवं सदा ॥
विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति ।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे ॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत् ।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ॥
विधाय लोकप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ।
बाधा याऽन्यग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति ॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत् ॥

'भगवान गणपति और धर्मराज युधिष्ठिर का स्मरण करते हुए सूर्य पुत्र शनि देवता से अर्चना कर रहा हूं कि वह मेरे सभी अंगों की रक्षा करें। तेरहवीं तिथि प्रिय वाले, विशाल नेत्रधारी, मयूर कण्ठ की शोभा से युक्त शनि देवता हम पर कृपादृष्टि रखें। ग्रहों में प्रमुख हमारे कष्टों को नष्ट करें। शमी के पुष्प को पसंद करने वाले शनिदेव हमारे सभी रोग-विकारों को नष्ट करें।'

शनि शांति प्रयोग

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः॥

प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को अर्घ्य दें। फिर सूर्यदर्शन करते हुए नित्य २१ बार उपरोक्त श्लोक का पाठ करें। शनि की प्रतिकूलता समाप्त होती है। समस्त पीड़ाओं को शनिदेव हर लेते हैं।

श्री शनिवज्रपंजरकवचम्

विनियोग— *अस्य श्री शनैश्चर कवच-स्तोत्रस्य कश्यप ऋषिः अनुष्टुपछन्दः शनैश्चरो देवता श्रीशक्तिः शूं कीलकम् शनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।*

नीलांबरो नीलवपुः किरीटी
गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः
सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः॥

श्रृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्॥
कवचं देवतावासं वज्रपंजरसंज्ञकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्॥
ॐ श्री शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु कर्णौ पातु यमानुजः॥
नासां विवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकंठश्च मे कंठं भुजौ पातु महाभुजः॥

स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः ।
वक्षं पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा ॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मंदः पातु कटिं तथा ।
ऊरू ममांतकः पातु यमो जानुयुगं तथा ॥
पादौ मंदगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः ।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन्मे सूर्यनन्दनः ॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्यसुतस्य यः ।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥
व्ययजन्म द्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा ।
कलत्रस्थानगो वापि सुप्रीतस्तु सदा शनिः ॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे ।
कवचं पठते नित्यं न पीडा जायते क्वचित् ॥
इत्येत्कवचं द्दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा ।
जन्मलग्न स्थितान्दोषान्सर्वान्नाशयते प्रभुः ॥

इस दिव्य कवच की स्तुति करने से आराधक के सभी कष्ट दूर होते हैं। जन्म-कुण्डली में शनि का प्रकोप होने पर भी मनुष्य अनेक कष्टों से सुरक्षित रहता है।

श्री शनि व्रत कथा

एक समय व्यासजी के शिष्य सूतजी अपने शिष्यों के साथ श्रीहरि का स्मरण करते हुए नैमिषारण्य में आए। श्री सूतजी को आया देखकर महातेजस्वी शौनकादि मुनि उठकर खड़े हो गए। उन्होंने श्री सूतजी को प्रणाम किया। मुनियों द्वारा दिए आसन पर श्री सूतजी बैठ गए।

श्री सूतजी से शौनक आदि मुनियों ने विनयपूर्वक पूछा—हे मुनि! कलियुग में कोई भी मनुष्य पुण्य न करेगा, पुण्य के नष्ट होने से मनुष्यों की प्रकृति पापमय होगी, इस कारण तुच्छ विचार करने वाले मनुष्य अपने अंश सहित नष्ट हो जावेंगे। हे सूतजी! जिस तरह थोड़े ही परिश्रम, थोड़े धन से, थोड़े समय में पुण्य प्राप्त हो ऐसा कोई उपाय हम लोगों को बतलाइए। हे मुने! कोई ऐसा

व्रत बतलाइए जिसके करने से शनि द्वारा प्रदत्त कष्ट मनुष्यों को न भोगने पड़ें तथा जिस व्रत के करने से शनिदेव प्रसन्न हों।

सूतजी बोले—हे मुनिश्रेष्ठ! तुम धन्य हो, क्योंकि सब प्राणियों का हित चाहते हो! मैं आपसे उस उत्तम व्रत को कहता हूं, जिसके करने से भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं और शनि ग्रह के कष्ट प्राप्त नहीं होते।

ध्यान देकर सुनें—

जब युधिष्ठिर आदि पांडव वनवास में अनेक कष्ट भोग रहे थे, उस समय उनके प्रिय सखा श्रीकृष्णा उनके पास पहुंचे। युधिष्ठिर ने उन्हें सत्कारपूर्वक सुंदर आसन पर बैठाया। श्रीकृष्णा बोले—हे युधिष्ठिर! कुशलतापूर्वक तो हो? युधिष्ठिर ने कहा, हे प्रभो! आपकी कृपा है।

फिर युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णा से शनि ताप का उपाय बताने का निवेदन किया।



श्रीकृष्ण बोले—जो मनुष्य भक्ति और श्रद्धायुक्त होकर शनिवार के दिन भगवान शंकर का व्रत करते हैं, उन्हें शनि की ग्रह दशा में कोई कष्ट नहीं होता है। उनको निर्धनता नहीं सताती तथा इस लोक में अनेक प्रकार के सुखों को भोगकर अंत में

तपस्वियों के लिए भी दुर्लभ शिवलोक की प्राप्ति होती है।

युधिष्ठिर बोले—हे प्रभु! सबसे पहले यह व्रत किसने किया था। कृपा करके इसे विस्तारपूर्वक कहें तथा इसकी विधि भी बतलाएं।

भगवान श्रीकृष्ण बोले—शनिवार के दिन विशेषकर श्रावण मास में शनि की लौह निर्मित प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर अनेक प्रकार के गंध, अष्टांग, धूप, फल, उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से उसका पूजन करे। शनि के दस नामों का उच्चारण करे। तिल, जौ, उड़द, गुड़, लोहा, नीले वस्त्र का दान करे। फिर भगवान शंकर का विधिपूर्वक पूजन करे। आरती कर प्रार्थना करे। हे युधिष्ठिर! पहले शनिवार को उड़द का भात, दूसरे को केवल खीर, तीसरे को खजला, चौथे को पूरियों का

भोग लगावे। व्रत की समाप्ति पर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावे।

सबसे पहले जिसने इस व्रत को किया था, अब उसका इतिहास भी सुनो—

पूर्वकाल में इस पृथ्वी पर एक राजा राज्य करता था। दैवगति से राजा और राजकुमार पर शनि की दशा आई। राजा को उसके शत्रुओं ने मार दिया। राजकुमार बेसहारा हो गया। राजगुरु को भी वैरियों ने मार दिया। उसकी विधवा ब्राह्मणी तथा उसका लड़का शुचिव्रत बचा रह गया। ब्राह्मणी ने राजकुमार धर्मगुप्त को साथ लिया और नगर को छोड़कर चल दी।

गरीब ब्राह्मणी दोनों कुमारों का बहुत कठिनाई से निर्वाह कर पाती थी। एक दिन जब वह ब्राह्मणी दोनों कुमारों को लिए एक नगर से दूसरे नगर जा रही थी कि मार्ग में उसे महर्षि शांडिल्य के दर्शन हुए।

ब्राह्मणी ने दोनों बालकों के साथ मुनि के चरणों में प्रणाम किया और बोली—महर्षि! मैं आज आपके दर्शनों से कृतार्थ हो गई। यह मेरे दोनों कुमार आपकी शरण हैं, आप इनकी रक्षा करें।

मुनि शांडिल्य, ब्राह्मणी की सब बात सुनकर बोले—देवी! तुम्हारे ऊपर शनि का प्रकोप है, अत: शनिवार के दिन व्रत करके भोलेशंकर की आराधना किया करो, इससे तुम्हारा कल्याण होगा।

ब्राह्मणी और दोनों कुमार मुनि को प्रणाम कर शिव मंदिर के लिए चल दिए। दोनों कुमारों ने ब्राह्मणी सहित मुनि के उपदेश के अनुसार शनिवार का व्रत किया तथा शिवजी का पूजन किया। दोनों कुमारों को यह व्रत करते-करते चार मास व्यतीत हो गए।

एक दिन शुचिव्रत स्नान करने के लिए

गया। कीचड़ में उसे एक बहुत बड़ा कलश दिखाई दिया। उसमें धन था। शुचिव्रत कलश लेकर घर आया और मां से बोला, हे मां! शिवजी के प्रसाद को देखो, भोलेशंकर ने इस कलश के रूप में धन दिया है।

माता ने आदेश दिया—बेटा! तुम दोनों इसको बांट लो।

लेकिन धर्मगुप्त ने धन लेने से इन्कार कर दिया। उसका कहना था कि जिसका भोग हो, वही भोगे।

धर्मगुप्त धैर्यपूर्वक प्रेम और भक्ति के साथ शनि का व्रत करके पूजा करने लगा। एक वर्ष व्यतीत हो गया।

वसंत ऋतु का आगमन हो चुका था। राजकुमार धर्मगुप्त तथा ब्राह्मण पुत्र शुचिव्रत दोनों ही वन में घूमने के लिए गए। घूमते-घूमते वे काफी दूर निकल गए। एक जगह

उन्हें सैकड़ों गंधर्व कन्याएं खेलती हुई दिखीं। राजकुमार स्वयं को रोक न सका। वह उनकी ओर चल दिया। ब्राह्मण कुमार उधर नहीं गया।

उन गंधर्व कन्याओं में से एक सुंदरी उस राजकुमार पर मोहित हो गई। गंधर्व कन्या ने राजकुमार को पल्लवों का आसन दिया। राजकुमार आसन पर बैठ गया। गंधर्व कन्या ने राजकुमार से उसका परिचय पूछा। राजकुमार ने अपनी सारी गाथा उसे सुना दी। फिर राजकुमार ने उस गंधर्व कन्या से पूछा—आप कौन हैं? किसकी पुत्री हैं और किस कार्य से यहां आई हैं?

विद्रविक नाम के गंधर्व की मैं पुत्री हूं, मेरा नाम अंशुमति है। आपको आता देख आपसे बात करने की इच्छा हुई, इसी से मैं सखियों को अलग भेजकर अकेली रह गई हूं। गंधर्व कहते हैं कि मेरे बराबर संगीत

विद्या में कोई निपुण नहीं है। भगवान शंकर ने हम दोनों पर कृपा की है, इसलिए आपको यहां पर भेजा है, अब से मेरा-आपका प्रेम कभी न टूटेगा।

ऐसा कहते हुए कन्या ने अपने गले का मोतियों का हार राजकुमार के गले में डाल दिया।

राजकुमार धर्मगुप्त ने कहा—मेरे पास न राज है, न धन। आप मेरी भार्या कैसे बनेंगी? आपके पिता हैं, आपने उनकी भी आज्ञा नहीं ली है।

गंधर्व कन्या बोली—अब आप अपने घर जाएं और परसों प्रातःकाल यहां अवश्य पधारें।

राजकुमार से ऐसा कहकर गंधर्व कन्या अपनी सहेलियों के पास चली गई। राजकुमार धर्मगुप्त शुचिव्रत के पास चला आया और उसे सब समाचार कह सुनाया।

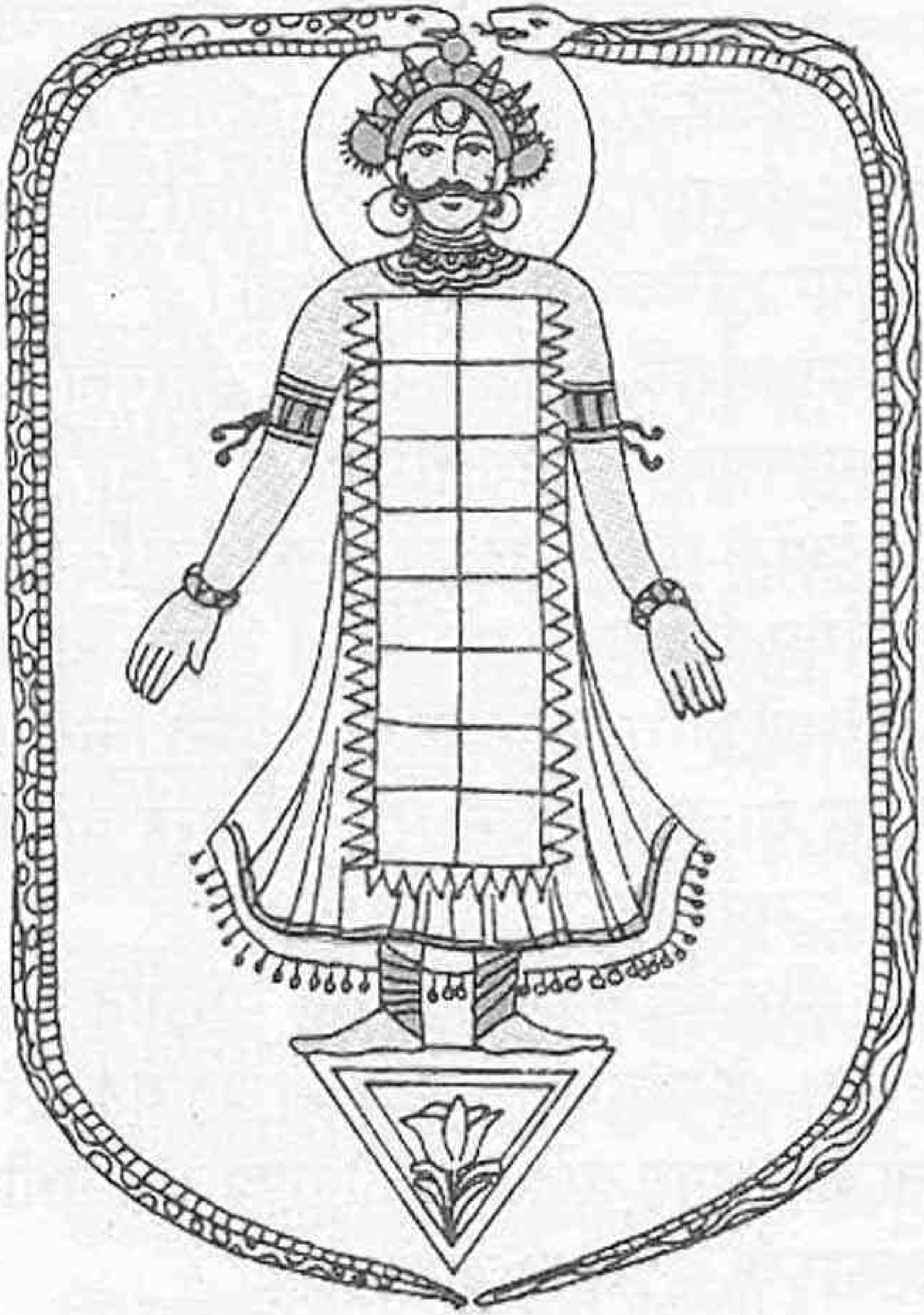
राजकुमार धर्मगुप्त तीसरे दिन शुचिव्रत को साथ लेकर उसी वन में गया। उसने देखा कि स्वयं गंधर्वराज विद्रविक उस कन्या को साथ लेकर उपस्थित हैं। गंधर्वराज ने दोनों कुमारों का अभिवादन किया और दोनों को सुंदर आसन पर बैठाकर राजकुमार से कहा, राजकुमार! मैं परसों कैलाश पर गौरी-शंकर के दर्शन करने के लिए गया, वहां करुणारूपी सुधा के सागर भोलेशंकरजी महाराज ने मुझे अपने पास बुलाकर तुम्हारी सहायता करने की आज्ञा दी। उन्हीं की आज्ञा को शिरोधार्य कर मैं अपने घर चला आया। वहां मेरी पुत्री अंशुमति ने भी ऐसी ही प्रार्थना की। शिवशंकर की आज्ञा तथा अंशुमति के मन की बात जानकर इसको इस वन में लाया हूं, मैं इसे आपको सौंपता हूं। मैं आपके शत्रुओं को परास्त कर आपको राज्य दिला दूंगा।

ऐसा कहकर गंधर्वराज ने अपनी कन्या का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया तथा अंशुमति की सहेली की शादी ब्राह्मण कुमार शुचिव्रत के साथ कर दी।

गंधर्वराज ने राजकुमार की सहायता के लिए गंधर्वों की चतुरंगिणी सेना भी दी। शत्रुओं ने राजकुमार का राज्य लौटा दिया। धर्मगुप्त सिंहासन पर बैठा। उसने अपने धर्मभाई शुचिव्रत को मंत्री नियुक्त किया। जिस ब्राह्मणी ने उसे पुत्र की तरह पाला था, उसे राजमाता बनाया।

श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को समझाते हुए कहा—हे पांडुनंदन! आप भी यह व्रत करें तो कुछ समय बाद आपको राज्य और सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी।

युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण भगवान की पूजा की और व्रत किया। व्रत के प्रभाव से पांडवों ने महाभारत में विजय प्राप्त की।



॥ अथ ध्यानम् ॥

नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी ॥

श्री शनि चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन,
मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुख दूर करि,
कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु,
सुनहु विनय महराज।
करहु कृपा हे रवि तनय,
राखहु जन की लाज॥

जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला।
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै
माथे रतन मुकुट छवि छाजै।

परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके।
हिये माल मुक्तन मणि दमके॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिच करैं अरिहिं संहारा॥
पिंगल, कृष्णो, छाया, नन्दन।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन॥
सौरी, मंद, शनी, दश नामा।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा॥
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहीं।
रंकहुं राव करैं क्षण माहीं॥
पर्वतहू तृण होइ निहारत।
तृणहू को पर्वत करि डारत॥

राज मिलत बन रामहिं दीन्हो।
कैकेई की मति हरि लीन्हो॥
बनहूं में मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चुराई॥
लखनहिंशक्ति विकल करि डारा।
मचि गा दल में हाहाकारा॥
रावण की गति-मति बौराई।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंग बीर की डंका॥
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मयूर निगलि गै हारा।
हार नौलखा लाग्यो चोरी।
हाथ पैर डरवायो तोरी॥



भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलहिं घर कोल्हू चलवायो॥
विनय राग दीपक महं कीन्हो।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हो॥
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी॥
तैसे नल पर दशा सिरानी।
भूंजी मीन कूद गइ पानी॥

श्री शंकरहिं गह्यो जब जाई।
पारवती को सती कराई॥
तनिक विलोकत ही करि रीसा।
नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी।
बची द्रौपदी होति उघारी॥
कौरव के भी गति मति मार्‌यो।
युद्ध महाभारत करि डार्‌यो॥
रवि कहं मुख महं धरि तत्काला।
लेकर कूदि पर्‌यो पाताला॥
शेष देव लखि विनती लाई।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना।
हय दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना॥

जम्बुक सिंह आदि नग धारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
हय ते सुख सम्पति उपजावैं॥
गर्दभ हानि करै बहु काजा।
सिंह सिद्ध कर राज समाजा॥
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी॥
तैसहि चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लौह चांदी अरु तामा॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं।
धन जन सम्पति नष्ट करावैं॥

समता ताम्र रजत शुभकारी।
स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी॥
जो यह शनी चरित्त नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै॥
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला।
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत शनि ग्रह शांति कराई॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत॥
कहत रामसुन्दर प्रभु दासा।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकासा॥

॥ दोहा ॥

पाठ शनिश्चर देव को, कियो भक्त तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥



विशिष्ट शनि स्तोत्रम्

यह शनि स्तोत्र दशरथ द्वारा रचित है। शनि-प्रकोप को शांत करने के लिए इसके महत्व को बहुत आंका गया है। मनीषियों ने इसकी बहुत प्रशंसा की है। देवताओं तक ने इस स्तोत्र का पाठ किया है। इसके जप-मनन द्वारा शनिदेव की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है तथा साधक के सभी कष्टों का शमन हो जाता है।

विनियोग

श्री गणेशाय नमः।

ॐ अस्य श्रीशनिस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप-ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः, सौरिर्देवता, शं बीजम्, निःशक्तिः, कृष्णवर्णेति कीलकम्, धर्मार्थ-काम मोक्षात्मकचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करादिन्यास

शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। कृष्णांगाय अनामिकाभ्यां नमः। शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

शनैश्चराय हृदयाय नमः। मन्दगतये शिरसे स्वाहा। अधोक्षजाय शिखायै वषट्। कृष्णांगाय कवचाय हुम्। शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्। छायात्मजाय अस्त्राय फट्।

दिग्बंधन

ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बंधनम्।

ध्यान

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं
गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम्।
चतुर्भुज सूर्यसुतं प्रशान्तं
वंदे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यत्॥

अथ स्तोत्रम्

रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुरा।
शनैश्चरप्रसादार्थं सप्तद्वीपाधिपोऽभवत्॥
कृत्तिकान्ते शनिं ज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः।
रोहिणीं भेदयित्वा तु शनिर्यास्यति साम्प्रतम्॥
शकटं भेद्यमित्युक्तं सुरासुर भयंकरम्।
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं भविष्यति सुदारुणम्॥
एतच्छ्रुत्वा तु तद्वाक्यं मन्त्रिभिः सह पार्थिवः।
व्याकुलं च जगद् दृष्ट्वा पौरजानपदादिकम्॥
पप्रच्छ प्रयतो राजा वसिष्ठप्रमुखान् द्विजान्।
समाधानं किमत्रास्ति ब्रवन्तु द्विजसत्तमाः॥

वसिष्ठ उवाच :—

प्राजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्ने कुतः प्रजाः।
अयं योगो ह्यसाध्यश्च ब्रह्मशक्रादिभिः सुरैः॥
तदा संचिन्त्य मनसा साहसं परम ययौ।
समाधाय धनुर्दिव्यं द्वियायुधसमन्वितम्॥

रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम् ।
सपादयोजनं लक्षं सूर्यस्योपरि संस्थितम् ॥
हंसवर्णहयैर्युक्ते महाकेतुसमुच्छ्रिते ।
दीप्यमानो महारत्नैः किरीटमुकुटोज्ज्वलैः ॥
व्यराजत तदाकाशे द्वितीय इव भास्करः ।
आकर्णं चापमाकृष्य सह शस्त्रं नियोजितम् ॥
कृत्तिकान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्राविशत्तां च रोहिणीम् ।
दृष्ट्वा दशरथं चाग्रे तस्थौ तु भृकुटीमुखः ॥
संहारास्त्रं शनिर्दृष्ट्वा सुरासुरनिषूदनम् ।
प्रहस्य च भयात् सौरिरिदं वचनमब्रवीत् ॥

पौरुषं तव राजेन्द्र मया दृष्टं न कस्यचित् ।
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः ॥
मया विलोकिताः सर्वे भयं गच्छन्ति तत्क्षणात् ।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! तपसा पौरुषेण च ॥
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन ।

प्रसन्नो यदि मे सौरे एकश्चास्तु वरः परः ।

रोहिणी भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन ॥
सरितः सागरा यावद् यावच्चन्द्रार्कमेदिनी ।
याचितं तु महासौरे नान्यमिच्छाम्यहं वरम् ॥
एवमस्तु शनिप्रोक्तं वरं लब्ध्वा तु शाश्वतम् ।
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा ॥
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरय सुव्रत ।
प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनि तदा ।
न भेतव्यं न भेतव्यं त्वया भास्करनन्दन ॥
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्तव्यं कदाचन ।
कीर्तिरेषा मदीया च त्रैलोक्ये तु भविष्यति ॥
एवं वरं तु संप्राप्त हृष्टरोमा स पार्थिवः ।
रथोपरि धनुःस्थाप्य भूत्वा चैव कृतांजलिः ॥
ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकम् ।
राजा दशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत् ॥
सूर्यपुत्र! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः ।
देवासुरमनुष्याश्च पशुपक्षिसरीसृपाः ॥
त्वया विलोकिताःसर्वे दैन्यमाशु व्रजन्ति ते ।
ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः ॥

राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येते त्वया दृष्ट्यावलोकिताः।
देशाश्च नगरग्राम द्वीपाश्चैव तथा द्रुमाः॥
त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः।
प्रसादं कुरु हे सौरे वरदो भव भास्करे॥
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिव॥
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! स्तोत्रेणानेन सुव्रत।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते॥

दशरथ उवाच :—

प्रसन्नो यदि मे सौरे वरं देहि ममेप्सितम्।
अद्य प्रभृति पिंगाक्ष पीडा देया न कस्यचित्॥
प्रसादंकुरु मे सौरे वरोऽयं मे महेप्सितः।

शनि उवाच :—

अदेयस्तु वरोऽस्माकंतुष्टोऽहं च ददामि ते॥
त्वया प्रोक्तं मम स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः।
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धिविद्याधरोरगाः॥
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन।
मृत्युस्थाने चतुर्थे वा जन्मव्ययद्वितीयगे॥

गोचरेजन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च।
यः पठेद् द्वित्रिसन्ध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः॥
न तस्य जायते पीडा कृता वै मम निश्चलम्।
प्रतिमा लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्भुजाम्॥
वरदां च धनुःशूलबाणांकितकरां शुभाम्।
अयुतमेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः॥
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैर्घृताक्तैर्नीलपंकजः।
पायसं शर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत्॥
ब्राह्मणान् भोजयेत् तत्र स्वशक्त्या घृतपायसैः।
तैलं वा तिलराशीं वा प्रत्यक्षं वा यथाविधि॥
पूजनं चैव मन्त्रेण कुंकुमाद्यां च लेपयेत्।
नील्या वा कृष्णतुलसीशमीपत्रादिभिः शुभम्॥
धेनुं वा वृषभं चापि सवत्सां च पयस्विनीम्।
एवं विशेषपूजां च मद्वारे कुरुते नृप॥
मंत्रोद्धारविशेषेण स्तोत्रेणानेन पूजयेत्।
पूजयित्वा जपेत् स्तोत्रं भूत्वा चैव कृतांजलिः।
तस्य पीडां न चैवाहं करिष्यामि कदाचन॥
रक्षामि सततं तस्य पीडां चान्यग्रहस्य च।

अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत् ॥
वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्तदा ।
मत्वा कृतार्थमात्मानं नमस्कृत्य शनैश्चरम् ॥
शनैश्चराभ्यनुज्ञातो रथमारुह्य वीर्यवान् ।
स्वस्थानं च गतो राजा प्राप्तकामोऽभवत्तदा ॥
सर्वसिद्धिमवाप्याथ विजयी सर्वदाऽभवत् ।

यह स्तोत्र अद्वितीय है। मंत्रोच्चारपूर्वक इस स्तोत्र से जो शनिदेव का पूजन-अर्चन करता है, उसकी सभी प्रकार की पीड़ाओं को शनिदेव हर लेते हैं। अपमृत्यु के नाश के लिए और दुखों को दूर करने के लिए तिल के तेल से स्नान करें। धान्य, उड़द, लोहा, सुवर्ण आदि का दान करें। इस शनि स्तोत्र का पाठ स्वयं करें या योग्य ब्राह्मण द्वारा गाए गए इस स्तोत्र को तन्मयता के साथ सुनें। ऐसा करने से सब जगह विजय, अर्थ, काम, आरोग्य और सुख की प्राप्ति होती है।

आरती श्री शनिदेवजी की

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी॥
॥जय जय.... ॥

श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी॥
॥जय जय... ॥

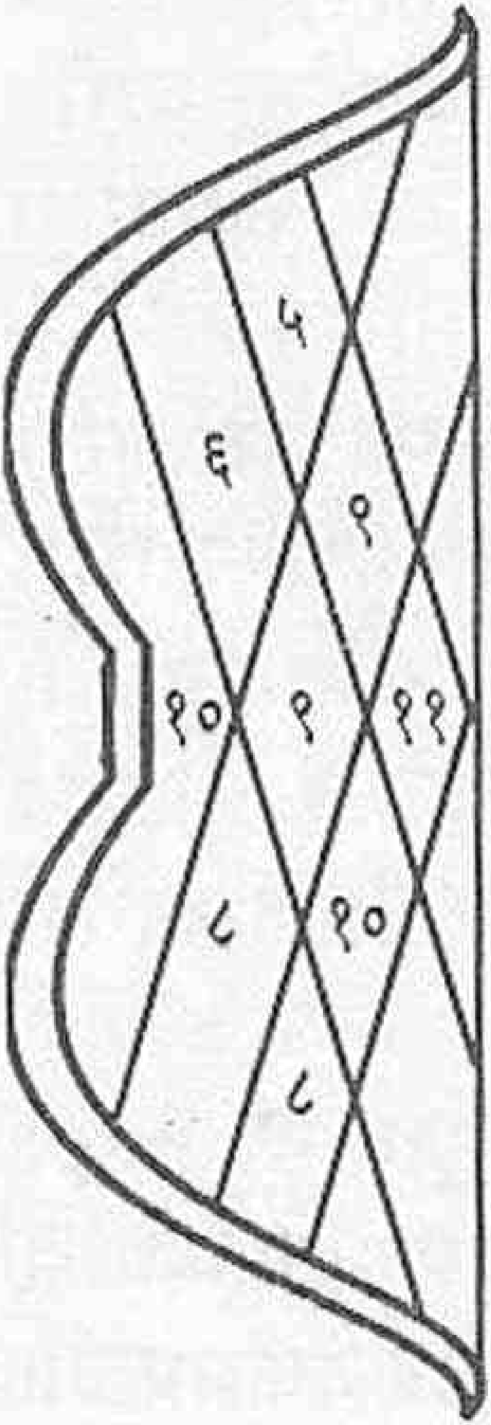
क्रीट मुकुट शीश सहज दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माल गले शोभित बलिहारी॥
॥जय जय... ॥

मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी॥
॥जय जय... ॥

देव दनुज ऋषि मुनि सुरत नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी॥
॥जय जय... ॥

शनि प्रकोप से बचाव

प्रस्तुत यंत्र को लोहे, शीशे या रांगे के पत्र पर, किसी शनिवार के दिन उत्कीर्ण कराएं



तथा यंत्र के बीच में एक नीलम (रत्न) लगवा लें अथवा बड़े आकार के नीलम पर यंत्र बनवा लें। तदुपरांत यंत्र का सविधि पूजन करें। आगे दिए गए मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठा करें। मध्याह्नकाल में तेल का दीपक जला कर, पूजन आदि करके दान कर दें। इसके साथ ही लोहे का कोई टुकड़ा या बर्तन आदि, कड़वा

तेल, उड़द, भैंस, काला वस्त्र, श्यामली गाय, कृष्ण पुष्प, स्वर्ण, कुलथी, कस्तूरी व कुछ धनादि भी दान करें।

सौंफ, खिरैटी, लौंग, खस, लोबान, सुरमा, काले तिल, गोंद तथा शतकुसुम मिश्रित जल से स्नान करें। इससे शनिकृत पीड़ा का अतिशीघ्र निवारण हो जाता है। प्राण-प्रतिष्ठा का मंत्र यह है—

ओं शन्नो देवीरभीष्टयऽआपोभवन्तु पीतये।
शंय्यो रभिस्त्रवन्तुनः ओं शनैश्चराय नमः॥

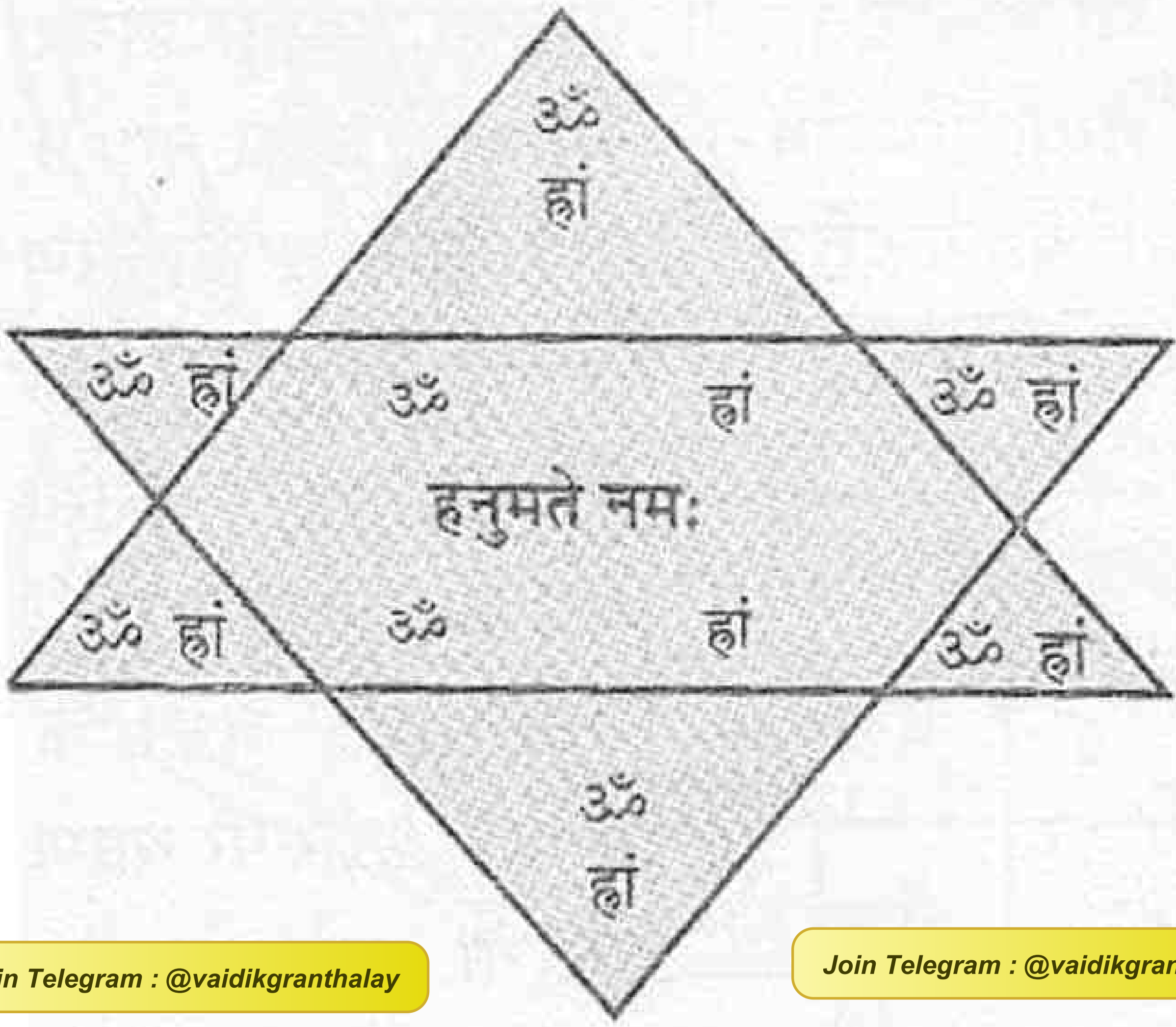
यह पन्द्रहिया यंत्र भी शनि कष्ट निवारण के लिए अद्वितीय है। इसे किसी लोहे के पत्र पर उत्कीर्ण करवा कर, उपरोक्त मंत्र से ही अभिमंत्रित करने के पश्चात् शरीर पर धारण करना अपेक्षित है।

४	९	२
३	५	७
८	१	६

इसके प्रभाव से शनि की साढ़ेसाती से उत्पन्न कष्ट दूर हो जाते हैं। मंत्र के 23 हजार जप से यंत्र सिद्ध हो जाता है।

वीरबाहुक प्रयोग

यह अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग है। सबसे पहले स्वर्ण, चांदी या ताम्रपत्र पर निम्न यंत्र को उत्कीर्ण कराएं। फिर लाल वस्त्र पर यंत्र



की स्थापना करके गंगाजल से कुश द्वारा मार्जन करें। इसके बाद यंत्र के मध्य दाहिने हाथ का अंगूठा रखकर प्रतिष्ठा का मंत्र पढ़ें। मंत्र यह है—

ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य प्राण प्राण इह प्राणाः पुनः ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र-जिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहै-वागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति- र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञंध्व समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इहमादयान्तामों प्रतिष्ठ।

प्रधानपीठादियंत्ररूपं श्रीहनुमानदेवता सुप्रतिष्ठितो वरदो भवतु॥

षोडशोपचार पूजनोपरांत श्रीराम मंत्र का न्यूनतम एक माला जप करें। नैवेद्य में लड्डू, मालपूआ या पंचमेवा हो।

श्रीराम का मंत्र यह है—

ॐ नमो भगवते रामाय महापुरुषाय नमः।

यंत्र को गुग्गल की धूप दें तथा एक माला, 'ॐ हनुमते नमः' इसका जप करते हुए गोदुग्ध में निर्मित हविष्यान्न से १०८ आहुतियां दें।

इसके पश्चात् यंत्र की उपस्थिति में एक माह तक नित्यप्रति चार पाठ हनुमानबाहुक के करने हेतु विधिवत् संकल्प करें। पाठारंभ और पाठान्त में श्रीराम के मंत्र का जप अभीष्ट है। इससे शनि की साढ़ेसाती के प्रकोप का संपूर्णतः निवारण होता है।

शनिवार को शुद्ध-पवित्र होकर हनुमानजी की मूर्ति के समक्ष बैठ उनकी पूजा-अर्चना करें। स्वयं अपने हाथों से राम मंत्र का उच्चारण करते हुए मूर्ति पर घृत मिश्रित सिंदूर लगाएं। सब अनुकूल हो जाता है।

शनि पाताल क्रिया

शनि की निर्दोष प्रतिमा का निर्माण उत्तराभाद्रपद, पुष्य या अनुराधा नक्षत्र में कराएं। प्राण प्रतिष्ठा करें।

निम्नलिखित महामंत्र का 12 हजार की संख्या में जप करें।

ओं शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये।
शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥

जप पूर्ण होने पर—

साधना-स्थल पर एक गहरा गड्ढा खुदवाएं। फिर अत्यंत गोपनीय विधि से इस गड्ढे में शनि प्रतिमा को उल्टा करके मिट्टी से भली-भांति दाब दें एवं गड्ढे को समतल कर दें। शनि प्रतिमा का शीश नीचे की ओर होने से वह पाताल की ओर प्रस्थापित होगी तथा जातक आजीवन शनि संताप से मुक्त रहेगा।

शनि शांति के टोटके

- शनिवार को वट एवं पीपल के वृक्ष के नीचे सूर्योदय से पूर्व कड़वे तेल का दीपक प्रज्वलित करके शुद्ध दूध एवं धूपादि अर्पित करना चाहिए।
- काली गाय की सेवा करने से शनिदेव प्रसन्न होते हैं। उसके शीश पर रोली और सींगों में कलावा बांधकर धूप-आरती करनी चाहिए। फिर परिक्रमा करके गाय को बूंदी के चार लड्डू खिलाएं। बंदरों और काले कुत्तों को लड्डू खिलाने से भी शनि के कुप्रभाव का शमन होता है।
- शनिवार के दिन अपने हाथ के नाप का उन्नीस हाथ लंबा काला धागा बटकर, माला की भांति गले में पहनें। इस प्रयोग से शनि की अनिष्टता शांत हो जाती है।

- शुक्रवार की रात में काले चने पानी में भिगो दें। शनिवार को ये चने, कच्चा कोयला, हल्की लोहे की पत्ती एक काले वस्त्र में बांधकर मछलियों के मध्य डाल दें। पूरे एक वर्ष तक प्रत्येक शनिवार को यह क्रिया करें। इसके फलस्वरूप शनि जनित कोप शांत होता है। जो व्यक्ति मछलीभक्षी हों, उन्हें प्रयोगकाल में भूलकर भी मछली का भक्षण नहीं करना चाहिए।
- सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा एवं लोध्र मिले हुए जल से स्नान करें। आंखों में सुरमा लगाना और तेल मालिश करना भी लाभप्रद है।
- कांसे की कटोरी में तेल भरें। उसमें अपना प्रतिबिंब देखकर तेल दान करें।
- काली गाय के घी का दीपक रोज शाम को मंदिर में जलाएं।

- शनि के प्रतिकूल होने पर दुर्घटना का भय सदैव बना रहता है। बचाव के लिए नीचे दिए मंत्र का सुबह, दोपहर और सायं (विशेषकर संधिकाल में) जपें। अपनी छाती पर फूंक मारें।

ओं आं ह्रीं क्लीं श्रीं द्रूं द्रं हुं फट्
रक्ष रक्ष कालिके कुंडलिके निगुटे
अस्त्र शस्त्र, मर्जार व्याघ्र कुदंष्ट्रिभ्यो
विषेभ्यो, शत्रुभ्यो सर्वेभ्यो द्री दूं स्वाहा ॥

उपरोक्त प्रयोग उनके लिए अत्यंत लाभकारी है, जिन्हें घोर जंगल की राहों से आना-जाना होता है।

- वीरान जगह पर जमीन में सुरमा दबाएं।
- बरगद के पेड़ पर दूध चढ़ा कर गीली मिट्टी से तिलक करें।
- मांसाहार और मदिरा के सेवन से बचें। सर्पों को संरक्षण दें।

नीलम धारण

नीलम एक ऐसा रत्न है जो शनि के दुष्प्रभाव को नष्ट करता है। नीलम क्षणभंगुर रत्न है, अतः सावधानी रखना आवश्यक है।

दोष—हरित, आभारक्त, बदरंग, डोरा, दूधक-चीर, दुरगा, जाला, गड्ढा पोल, गुम, मैलापन और डंक।

श्रेष्ठ नीलम—श्रेष्ठ नीलम की सात विशेषताएं हैं—

१. दूसरे द्रव्य की परछाईं न लेकर अपनी चमक से उसे चमकाने वाला हो अथवा एक ही रंग का दिखाई दे।
२. चिकना हो।
३. पारदर्शक हो, चमक वाला हो।
५. छूने पर मुलायम लगे।

६. जिसके भीतर से किरणें फूटती नजर आएं।

पूर्णिमा की रात को, एक गौर वर्ण की सुन्दरी के हाथ में स्वच्छ दूध का भरा कटोरा दे दिया जाए और उस पात्र पर नीलम का प्रकाश डाला जाए, यदि नीलम के प्रकाश से दूध, दूध के पात्र और सुन्दरी पर तत्काल नीली आभा छा जाए तो नीलम उत्तम जाति का समझा जाना चाहिए। उत्तम नीलम की एक विशेषता और है, वह यह कि तिनका उसके समीप ले जाएं तो वह उससे चिपक जाता है।

पहचान

१. नीलम को मोनोब्रोमोनैफ्थालीन द्रव में डुबोकर उसके पीछे श्वेत कागज या कपड़ा रखकर खाली आंख से देखें। संश्लिष्ट में रंगों की वक्र पट्टियां दिखाई देंगी, असली में ये सीधी होंगी या

षट्भुजीय प्रिज्म के समानान्तर।

२. असली प्रकृति प्राप्त नीलम में कुछ खनिज पदार्थ भीतर रह जाते हैं, जो स्थान भेद के अनुसार भिन्न-भिन्न वस्तुएं होती हैं।

३. साफ पानी के गिलास में नीलम डाल दिया जाए तो उसमें से नीली किरणें निकलती हुई सी दिखाई देती हैं।

४. नीलम सामान्यतः अपने आकार से वजन में हल्का होता है।

५. धूप में रखने पर इसकी चमक में वृद्धि होती है।

प्रयोग—शनि-समय, शनि-दोष हो, साढ़ेसाती हो, रोग हो, शनिवार के दिन स्वाती, विशाखा, चित्रा, धनिष्ठा, श्रवण या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो तो किसी शुभ दिन को पंच धातु, सोना या फौलाद में अंगूठी में नीलम रत्न जड़ाएं। जन्म-कुण्डली में शनि जिस राशि

में हो, उसी राशि अनुसार नीलम का तौल शुभ माना गया है।

मेष	४ रत्ती	तुला	५ रत्ती
वृष	४ रत्ती	वृश्चिक	९ रत्ती
मिथुन	३ रत्ती	धनु	५ रत्ती
कर्क	७ रत्ती	मकर	९ रत्ती
सिंह	७ रत्ती	कुंभ	९ रत्ती
कन्या	३ रत्ती	मीन	५ रत्ती

धारण करने के लिए किसी योग्य आचार्य से परामर्श अवश्य करें। इस रत्न को धारण करने के कुछ समय बाद ही इसका अनुकूल व प्रतिकूल प्रभाव महसूस होने लगेगा। नीलम पहनने का पांच वर्ष तक प्रभाव रहता है। तदुपरान्त पुनः प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए। नीलम के अभाव में फौलाद की अंगूठी पहननी चाहिए। काले घोड़े की नाल की अंगूठी पहनना भी शुभ रहता है।


अधिक ग्रंथ विनामुल्य हेतु
॥यजुर्वेद॥
॥सामवेद॥
वैदिक ग्रंथालय
JOIN TELEGRAM